विचार बिन्दु

कुमंत्रणा से राजा का, कुसंगति से साधु का, अत्यधिक दुलार से पुत्र का और अविद्या से ब्राह्मण का नाश होता है।

–विदुर

माननीयों को लूट की छूट

'सत्ता व स्वर्ण की लूट है', लूट सके तो लूट ना जाने किस दौर में करवट बदले ऊँट'। आज माननीयों की मनमानी पर कोई नियंत्रण नहीं है। जनप्रतिनिधि के रूप में एक अवधि के लिये चुने जाने के बाद इन्हें खुली छूट है घोर अनुशासनहीनता की, अकर्मण्यता की, उद्दण्डता की, अनर्गल प्रलाप की और अटूट संपदा एकत्रित करने की। जो इनसे बचे हुए हैं वे विवश हैं, असहाय हैं, मूकदृष्टा हैं। विधान सभाओं और संसद में नित्य प्रति के हंगामें संसदीय लोकतंत्र का कलंक है, और इस कलंक से हमारे माननीय कलंकित हैं।

देश में जो काम पर, मजदूरी पर, अनुपस्थित रहता है, काम नहीं करता है, धरने-प्रदर्शन और हड़ताल पर रहता है तो काम नहीं तो दाम नहीं का सूत्र लागू होता है। पर ये माननीय सृष्टि के अति विशिष्ट जीव हैं जिन पर कोई नियम, कानून लागू नहीं होता। ये इस देश के संविधान तथा ईश्वर के नाम पर शपथ लेते हैं, देश सेवा की, निष्ठा व ईमानदारी की। परंतु शपथ लेते ही इनका चोला बदल जाता है। ये मन, वचन, कर्म से भ्रष्ट होने लगते हैं।

संसद विधानसभा व अन्य निर्वाचित सदस्यों की संस्था में कई-कई दिन तक कोई विधायी कार्य नहीं होता पर सदस्य के परिलाभ यथावत रहते हैं। सबसे ताजा उदाहरण भारत की लोकसभा व राज्यसभा के सत्रों का है। यह सभी कुछ पहली बार नहीं हो रहा, लगभग प्रत्येक सत्र में यही स्थिति रहती है। विपक्ष अम्बानी-अडानी संबंधी जाँच कराने पर और केन्द्रीय एजेन्सियों के दुरुपयोग के मुद्दे पर सत्तापक्ष काँग्रेस के शीर्ष नेता राहुल गाँधी के विदेशों में लोकतंत्र को खतरा बताने और उसे बचाने के बयानों पर क्षमा माँगने पर अड़ा हुआ है।

पहला अंतर पक्ष-विपक्ष के मुद्दों पर यह है कि विपक्ष के आरोप सत्तापक्ष के देश के भीतर के आचरण से है और विपक्षी नेता के बयान विदेशों में भारत की छवि को खराब करने और देश के आंतरिक मामलों में विदेशी हस्तक्षेप के आह्वान जैसा है। अडानी और अम्बानी इस देश का पैसा लेकर भागे नहीं हैं। उन्होंने देश के विकास में, रोज़गार सृजित करने में अभूतपूर्व योगदान किया है। हाँ, उद्योगपति अपने व्यवसाय में धन का उलट फेर करते हैं और उस कारण उनके शेयर भी घटते-बढ़ते हैं। पर क्या यह सच नहीं है कि कुछ देशी और विदेशी ताकतें इस देश को विकसित व सबल नहीं देखना चाहतीं। यूँ तो कई मित्र देश भी यह नहीं चाहते। अमेरिकी एजेन्सी हिडनबर्ग और यू.के. की एजेन्सी बी.बी.सी. इसके उदाहरण हैं। प्रश्न उठता है कि इन विदेशी एजेन्सियों की भारत में इतनी रुचि क्यों है? क्या यह वही कहावत नहीं कि 'बेगानों की शादी में अब्दुल्ला दीवाना'। क्या उनके देशों में कम समस्याएँ हैं? अमेरिका के लिये रूस और चीन ही कम सिर दर्द नहीं हैं, भला वह भारत को क्यों एक बड़ी भारी 'शक्ति' बनने दे। यू.के. ने भारत पर सैंकड़ों वर्ष राज्य किया है, उसका शासित एक देश उससे भी आगे निकल कर आर्थिक शक्ति के उच्च पायदानों पर पहुँचे, यह किसको रास आयेगा। देशी प्रतिगामी ताकतें विदेशों का सहारा लेकर देश को अस्थिर करने में रुचि रखती हैं। नक्सलवाद की विचारधारा वामपंथियों द्वारा पोषित आंतरिक चुनौती है। इसी तरह पाकिस्तान और चीन द्वारा उत्पन्न एवं पोषित सीमा पर और देश के अंदर चलाई जा रही आतंकवादी एवं राष्ट्रविरोधी गतिविधियाँ भारत के लिये दूसरी बड़ी चुनौती है। गुलामी की मानसिकता से न उबरने वाले और मात्र अपने स्वार्थ में लिप्त देश के लोग भी राष्ट्रविरोधी ताकतों की मदद करने में लगे रहते हैं। यह एक कटु सत्य है कि केन्द्रीय सत्तापक्ष कभी राष्ट्रविरोधी गतिविधियों में लिप्त हो ही नहीं सकता, वह एक राष्ट्रवादी सत्ता है, जबकि विपक्ष में कई लोग अपने संकीर्ण स्वार्थों के कारण देश का अहित करने में भी नहीं चूकते, और इनमें अधिकांश हमारे माननीय ही हैं।

माननीयों द्वारा लूट में पक्ष-विपक्ष दोनों हिस्सेदार हैं। वर्तमान में केन्द्रीय सत्ता पक्ष बहुमत में है। पूर्व में भी बहुमत की पक्ष-विपक्ष की सरकारें रही हैं। इन दलों का शीर्ष नेतृत्व कभी भी अपने-अपने दल को इस लूट का औचित्य-अनौचित्य नहीं समझाता, अपने प्रभाव का प्रयोग नहीं करता, बल्कि समर्थन ही करता है, यह दुर्भाग्यपूर्ण है।

इन माननीयों द्वारा किये गये अभद्र व्यवहार की चर्चा भी मीडिया में आती रहती है। कभी सुरक्षा जाँच को लेकर हवाई यात्राओं में, कभी अधिकारियों व कर्मचारियों से मारपीट में इनके नाम आते हैं। इन माननीयों में एक बड़ी संख्या दागियों की है। न राजनीतिक दल और न ही चुनाव आयोग इस गंभीर बीमारी का इलाज करते हैं। संसद और सरकार तो इस पर ध्यान दें ही क्यों। हमाम में तो सभी नंगे हैं। सरकारें तो बनती ही ऐसे लोगों के कारण हैं जो धनबली और बाहुबली हों। धनबली और बाहुबलियों को अपनी प्रभुता का मद होना स्वाभाविक है, 'प्रभुता नाहि काहि मद नाहीं'। उनका यह मद जन प्रतिनिधि बनने पर और बढ़ जाता है 'सैंयाँ भये कोतवाल तो अब डर काहे का'?

इन माननीयों से अपेक्षा तो यह रहती है कि वे ज्यादा से ज्यादा अपने क्षेत्र का दौरा करें, जन समस्याओं को सुनें, उनका समाधान करें या करायें, राज्य व केन्द्र सरकार के ध्यान में लायें। जनता के मुद्दों को सदन में उठायें, अन्य जनप्रतिनिधियों की भी सुनें। सदन में बैठकर सरकार की रीति नीति की स्वस्थ आलोचना करें। किसी भी विकास कार्य या देश हित के कार्य को कैसे बेहतर किया जाये, इस पर सुझाव दें व जनहित में निर्णय लें। परंतु होता सब इसके विपरीत है। अध्यक्ष के आदेशों की अवहेलना, अवमानना, दस्तावेज फाड़कर अध्यक्ष की ओर फेंकना, वेल में जाकर शोर मचाना, वक्ताओं को न सुनना, नारेबाजी और शोर करते रहना आम नज़ारे होते हैं। हंगामा, धरना, प्रदर्शन, बहिगर्मन व संसद को न चलने देना, आदि के अशोभनीय उदाहरण ये जनता के सामने रखते हैं। क्या सीखता है देश इससे? अनुशासन हीनता ही तो सीखेगा। विपक्ष का एक नकारात्मक राजनीति करने का, केवल हर बात का विरोध करने का रवैया ही बन गया है। क्षेत्रीय दलों के अपने सत्ता बचाने के संकीर्ण स्वार्थ हैं तो राष्ट्रीय दलों में या तो प्रभावी नेतृत्व का अभाव है या कोई स्पष्ट रीति नीति का मानचित्र ही नहीं है।

माननीयों में क्षेत्रीय स्वार्थ सर्वोपरि होने व विपक्षी राष्ट्रीय दलों में मात्र सत्ता लोलुपता देश में विभाजक रेखाएँ खींच रही है। माननीयों के वेतन भत्ते, अन्य परिलाभ भी संसद चलने के समय के आधार पर दिये जाने चाहिये। उनके इतने परिलाभ हैं कि एक अतुल राशि का भार देश पर पड़ता है। हद तो हो ही जाती है जब उन्हें पेन्शन दी जाती है। क्या माननीय बनना एक नौकरी है या सेवा करना है।

सर्व विदित है कि सभी माननीय जन प्रतिनिधि निर्वाचित होने पर सम्पन्न से सम्पन्नतर और सम्पन्नतम होते जाते हैं। क्या देश को यह दिखाई नहीं देता है। निष्कर्ष यह कि मुफ्त की रेवड़ी पक्ष-विपक्ष सबको अच्छी लगती है और कोई भी इसका विरोध नहीं करता। माननीयों द्वारा व्यय की जाने वाली राशि का कोटा सर्वसमत्ति से बढ़ जाता है और इसी प्रकार अन्य आर्थिक लाभ और सुविधाएँ भी। कोई भी विरोध नहीं करता। समाचार पत्रों और इलेक्ट्रोनिक मीडिया में भी यह चर्चा होती है और बात आई-गई हो जाती है।

माननीयों द्वारा लूट में पक्ष-विपक्ष दोनों हिस्सेदार हैं। वर्तमान में केन्द्रीय सत्ता पक्ष बहुमत में है। पूर्व में भी बहुमत की पक्ष-विपक्ष की सरकारें रही हैं। इन दलों का शीर्ष नेतृत्व कभी भी अपने-अपने दल को इस लूट का औचित्य-अनौचित्य नहीं समझाता, अपने प्रभाव का प्रयोग नहीं करता, बल्कि समर्थन ही करता है, यह दुर्भाग्यपूर्ण है। वर्तमान केन्द्रीय सत्तापक्ष का शीर्ष नेतृत्व तो राष्ट्रवादी होने की बात करता है, ईमानदार, निष्ठावान, पारदर्शी होने का दावा करता है यह भी इस लूट के विरोध में स्वर नहीं उठाता यह आश्चर्यजनक है। निश्चय ही केन्द्रीय सत्ता पक्ष का शीर्ष नेता ईमानदार कहा ही जा सकता है, क्या वे इस लूट को रोकने हेतु सार्थक प्रयास करेंगे?

–अतिथि सम्पादक,
कैलाश विहारी वाजपेयी,
(स्वतंत्र चिंतक व लेखक)

विक्रम सम्वत् 2080 के पावन अवसर पर जानें दुनिया में प्रचलित विभिन्न प्रमुख कैलेण्डर और उनका इतिहास

डॉ. जे.के.गर्ग

चन्द्रमा दिखने का क्रम को हम चन्द्रमा की कलाएं भी कहते हैं । यह कलाएं एक तय समय के बाद अवश्य ही जारी रहती है । इस तरह दिन रात एवं चन्द्रमा की कलाओं को आधारित मानते हुवें महीनों और दिनों की गिनती की जाती है। जैसे हम जानते हैं कि सूर्यास्त के बाद ही तारें और चन्द्रमा दिखाई देते हैं और अन्धकार भी हो जाता है इसीलिए इस अवधी को रात कहा जाता है । सूर्योदय होने पर उजाला होने लगता है जो सूर्यास्त होने तक रहता है अत: इस अवधी को दिन कहा जाता है। यह भी ज्ञात हुआ कि मोसम में बदलाव सूर्य की वजह से ही होता है । सूर्य का एक चक्र एक मौसम से दुसरे मोसम माना जाता है। इसी तरह चन्द्रमा का चक्र एक नये चाँद से दुसरे नये चाँद माना जाता है। चन्द्रमा का चक्र साढे उन्नतीस दिनों के अंदर पूरा होता है इसी अवधी को महीना कहा जाता है। दिन रात और महीनों की गिनती हेतु कैलेंडर या पंचांग का जन्म हुआ । अलग देशों ने अपने अपने त्तीकों से कैलेंडर बनाये क्योंकि एक ही समय में प्रथ्वी के विभिन्न हिस्सों के अंदर मौसम और दिन रात की अवधी भी भिन्न-भिन्न होती है । हमारे विशाल देश के अंदर भी लगभग पचास तरह के कैलेंडर प्रचलित है।

चीनी और यूनान की सभ्यताओं के अंदर केलेंडर का मतलब चिल्लाना होता है। पुराने जमाने के अंदर एक आदमी मुनादी या घोषणा करता था कि कल कोन सी तिथी पर्व या व्रत होंगे । नील नदी के अंदर बाढ आयेगी या बारिश होगी। इस चिल्लाने वाले के नाम पर ही (थेट हु केलेंड्स ईज केलेंडर) कैलेंडर शब्द बना। लैटिन भाषा के अंदर केलेंडर का अर्थ हिसाब किताब करने का दिन माना गया।

विक्रम संवत--विक्रम संवत की शुरुआत 57 ईस्वी (बी .सी) से हुई थी। इसी दिन सम्राट विक्रमादित्य ने राज्य स्थापित किया। उन्हीं के नाम पर विक्रमी संवत नाम पढा । इस प्रकार से सं 2023 ईस्वी में विक्रम संवत 2080 होगा । विक्रम संवत के अंदर इसके अंदर साल का प्रथम मास चैत्र शुक्ल एकम या या प्रतिपदा और साल का अंतिम मॉस फाल्गुन होता है । विक्रम संवत अंग्रेजी कैलेंडर से 57 वर्ष आगे होता है । 22 मार्च 2023 को चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन से विक्रम संवत 2080 शुरू हो रहा है । 22 मार्च से ही नवरात्रा शुरू हो जाते राम नवमी नवरात्रा का अंतिम दिन होता है। विक्रम संवत के अंदर अंग्रेजी कैलेंडर के मुताबिक साधारणतया निम्न प्रकार से महीने होते हैं यथा चेत्र मास मार्च अप्रेल में, वैशाख अप्रेल मई में, जेयेष्ट -मई जून, आषाढ जून जुलाई, सावन जुलाई अगस्त, भाद्रपद अगस्त सितम्बर, अश्विन सितम्बर अक्तूबर, कार्तिक अक्तूबर नवम्बर, मगसर नवम्बर दिसम्बर, पोष दिसम्बर-जनवरी, माघ जनवरी फरवरी और फाल्गुन फरवरी--मार्च । दिवाली और दशहरा कार्तिक महीने के अंदर आते है वहीं राखी सावन मास के अंदर होती है और होली फाल्गुन मास मे मनाई जाती है ।

विक्रम संवत से जुड़ी धार्मिक और ऐतिहासिक मान्यता--चैत्र प्रति पदा का विशिष्ट ऐतिहासिक महत्व भी हैं क्योंकि सनातन धर्म की मान्यता है कि चैत्र शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्माजी ने सृष्टि की रचना की थी। सम्राट विक्रमादित्य ने इसी दिन राज्य स्थापित किया। उन्हीं के नाम पर विक्रमी संवत का पहला दिन प्रारंभ होता है। कहते हैं कि प्रभु श्री राम के राज्याभिषेक का दिन यही है। चैत्र प्रतिपदा शक्ति और भक्ति के प्रतीक नवरात्र का पहला दिन भी है। युधिष्ठिर का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ। चैत्र प्रतिपदा ही सिखो के द्वितीय गुरु श्री अंगद देव जी का जन्म दिवस भी है। स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने इसी दिन आर्य समाज की स्थापना की एवं कृण्वंतो विश्वमार्यम् का संदेश दिया । सिंध प्रान्त के प्रसिद्ध समाज रक्षक वरूणावत संत झूलेलाल जी का अवतरण भी इसी दिन हुआ था। सम्राट विक्रमादित्य की भांति शालिवाहन ने हूणों को पराजित कर दक्षिण भारत में श्रेष्ठ राज्य स्थापित करने हेतु यही दिन चुना था।

ग्रेगोरियन या अंग्रेजी कैलेंडर--ग्रेगोरियन या अंग्रेजी कैलेंडर के अंदर साल का प्रथम महीना जनवरी और अंतिम महीना दिसम्बर होता है। संसार के अधिकांश मुल्कों के अंदर ग्रेगोरियन या अंग्रेजी केलेंडर प्रचलित है। अनेक देशों के अंदर नव वर्ष एक जनवरी को धूमधाम हर्षोल्लास के साथ नये वर्ष का स्वागत किया जाता है। 25 दिसम्बर को क्रिसमस का पर्व भी मनाया जाता है।

शक संवत--शक संवत को राष्ट्रीय पंचांग बनाने का फैसला 22 मार्च 1957 को लिया गया । शक संवत को राष्ट्रीय पंचांग बनाने के लिये तर्क दिया गया कि इस संवत का उल्लेख प्राचीन शिलालेखों में भी मिलता है । यह भी माना जाता है कि शक संवत का प्रारंभ कुशक राजा कनिष्क के राज्य काल के समय 78 ईस्वी (ऐ. डी) को हुआ था । इसके अंदर साल का प्रथम मास चैत्र शुक्ल एकम या या प्रतिपदा और साल का अंतिम मास फाल्गुन होता है। ग्रेगोरियन या अंग्रेजी केलेंडर से 78 साल पीछे होता है इस तरह से 2023 ईस्वी में शक संवत (2023---78) यानि 1945 है ।

हिजरी कैलेंडर--हिजरी केलेंडर शुक्रवार 16 जुलाई 622 ईसवी के अंदर इस्लामिक या हिजरी कैलेंडर आरम्भ हुआ था । इस केलेंडर के अंदर एक उल्लेखनीय बात है कि इसके अंदर चन्द्रमा की घटती-बढती गति का का संयोजन नहीं किया गया है इससे वजह इसके महीने प्रति वर्ष लगभग 10 दिन पीछे खिसकते रहते हैं। इस केलेंडर को हिजरी कहा जाता है क्योंकि मोहम्मद साहिब ने इसी वर्ष अपने अनुयायीयों के संग मक्का को छोड करके मदीना के लिये हिजरत की थी। हिजरी केलेंडर के अंदर 12 महीने होते हैं जिसमे 29 और 30 दिन के बाद नया मॉस आरम्भ होता इस तरह एक साल के अंदर 354 दिन होते हैं ।

महीनों के नाम----मुहरम या एल्ब्रम, सफर, रबीउलअव्वली, बींउस सानी, ज्मद्लउल्ला, ज्म्द्स सानी, रजब, शाबान, रमजान, श्रीवाली, कुलकंद और जुल हिज्जा हिज्बी ।

मोहर्रम के महीने के अंदर हजरत इमाम हुसैन और उनके मित्रों ने बातिल से युद्ध करते हुए अपनी शहादत दी थी।

–डॉ. जे.के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कॉलेज शिक्षा, जयपुर

टसकोला जंगल में पैंथर का शव मिला

पावटा, (निसं)। टसकोला में जीण माता मंदिर के पास जंगल में एक चट्टान पर बने नाले में एक पूर्ण वयस्क नर पैंथर का शव मिलने से सनसनी फैल गई। ग्रामीणों ने वन विभाग को सूचना दी वहीं पैंथर को देखने ग्रामीणों की भीड़ एकत्र हो गई।

सूचना मिलते ही वन विभाग पावटा नाका से वनपाल विजय सिंह यादव, वन रक्षक मुकेश, सहायक वनपाल मीर सिंह सहित पूरा अमला मौके पर पहुंचा। मृत नर पैंथर की उम्र 5 से 6 साल बताई गई है। पहले तो शिकार की आशंका जताई जा रही थी, लेकिन विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा पैंथर की लाश का बारीकी से परीक्षण करने के बाद बताया गया कि ट्रोमेटिक शॉक से उसकी मृत्यु हुई है।

क्षेत्रीय वन अधिकारी सीताराम यादव ने बताया कि प्रथम दृष्टया इसे चट्टान से गिरने से हुई चोट को मौत का कारण माना जा रहा है।

वहीं मृत पैंथर के शव को वन विभाग नाका पावटा की टीम द्वारा क्षेत्र वन अधिकारी के दिशा निर्देशानुसार रेंज कार्यालय कोटपूतली में पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। जहां पोस्टमार्टम के लिए मेडिकल बोर्ड का गठन करते हुए डॉ. हरीश कुमार, डॉ. कैलाश शर्मा, डॉ. लेखराज नारवाल द्वारा मृत पैंथर का पोस्टमार्टम किया गया। रिपोर्ट आने के बाद चट्टान से गिरने के बाद एक दांत टूटना व ट्रोमेटिक शॉक को मौत का कारण बताया गया है। वहीं पुलिस प्रशासन, राजस्व विभाग व विशेषज्ञ चिकित्सकों के सामने पैंथर के शव का विधिवत दाह संस्कार किया गया।

विशेषज्ञ चिकित्सकों की टीम ने पैंथर के शव का पोस्टमार्टम किया।

राज्यपाल द्वारा पन्नालाल मेघवाल की पुस्तकों का विमोचन

डॉ. बीपी भटनागर

राज्यपाल श्री कलराज मिश्र ने राजभवन में बुधवार को सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के पूर्व संयुक्त निदेशक श्री पन्नालाल मेघवाल द्वारा लिखित राजस्थान हस्तशिल्प कलाएं एवं उसका अंग्रेजी अनुवाद 'दी हैंडीक्राफ्ट्स ऑफ राजस्थान' पुस्तकों का विमोचन किया।

राज्यपाल श्री कलराज मिश्र ने संदेश में कहा कि राजस्थान की अपनापे से भरी संस्कृति और यहां का सांस्कृतिक वैभव विविधता से आकर्षण का केंद्र रहा है। राजस्थान हस्तशिल्प कलाओं का आरंभ से ही गढ रहा है। अंचल विशेष के रहन-सहन और लोगों की परंपराओं से संबद्ध यहां की हस्तकलाएं वंशानुगत परंपराओं से पोषित राजस्थान की उत्सवधर्मी संस्कृति को गहरे से व्यंजित करती हैं।

उन्होंने कहा कि यह सुखद है कि श्री मेघवाल ने हस्तशिल्प पर केंद्रित इन पुस्तकों में हस्तकलाओं के विविध रूपों के साथ ही इस कला से जुड़े कलाकारों की आंचलिक पृष्ठभूमि, कला के सौंदर्यबोध और हस्तशिल्प से जुड़े विविध आयामों को शब्दों में पिरोया है। उम्मीद है, राजस्थान के विभिन्न अंचलों से जुड़ी भांत- भांत के हस्तकलाओं की ये पुस्तकें सुधि पाठकों के लिए उपयोगी होंगी।

लेखक ने इन पुस्तकों में तारकशी, ब्ल्यू पॉटरी, लाख की कृतियां, थेवा कला, बीकानेर की उस्तां कला, अकोला की रंगाई छपाई, थर्मोकोल शिल्प, चंदन पर नक्काशी, बस्सी की काष्ठ कला,

■ बुधवार को राज्यपाल कलराज मिश्र ने मेघवाल की पुस्तक 'राजस्थान हस्तशिल्प कलाएं' एवं उसके अंग्रेजी अनुवाद 'द हैण्डिक्राफ्ट्स ऑफ राजस्थान' का विमोचन किया

बाड़मेर की काष्ठ कला, कावड़ कला, धनुष बाण, मोलेला की मूर्तिकला, तलवाड़ा की मूर्तिकला, पाग- पागड़ियां, पेचवर्क, पेपरमेशी, टोंक के नमदे, सालावास दरी, फड चित्रकला, बेगूं की चित्रकला, कोटा डोरिया, बंधेज कला, खराद कला, ढाल तलवार एवं मेवाड़ शैली लघु चित्रकारी आदि हस्तकलाओं का विषद विवेचन किया है।

लेखक का मानना है कि कलाएं जीवन के उत्कर्ष और आनंद की अभिव्यक्ति करती हैं। मन की कल्पनाएं विविध कला स्वरूपों का आश्रय ठाहण कर नए-नए रूपाकारों की सृष्टि करती हैं। कलाएं मनुष्य के लिए अति महत्वपूर्ण और उपयोगी रही हैं। कला को जीवित रखने में कलाकार की अहम भूमिका है। कलाकार ईश्वर की एक बहुमूल्य कृति है। प्रतिभा संपन्न कलाकार किसी संस्था या कला गुरु का मोहताज नहीं होता। प्रतिभा से सृजन की भूख को वह कला के माध्यम से प्रकट करता है।

श्री मेघवाल ने परंपरागत कलाओं को रेखांकित करते हुए महसूस किया है कि माध्यम चाहे कोई भी हो, परिस्थितियां कैसी भी हो? कला का विकास कभी थमा नहीं, अपितु देशकाल व परिस्थितियों के अनुकूल बनाते हुए नवीन प्रयोगों के साथ आगे बढ़ा है। लेखक ने पुस्तकों में उद्धत किया है कि प्रकृति के बीच रहने वाले लोगों के लिए घर का आंगन, द्वार, दीवार ही कैनवास बन जाते हैं।

पेड़ पौधों, टहनियों की डंडियों से बनी कूंची और चूना, मिट्टी, गेरु, हल्दी जैसे घरेलू पारंपरिक तैयार रंगों से वे प्रकृति के विभिन्न स्वरूपों के माध्यम से अपने आसपास के जीवन को अभिव्यक्त करते हैं, वहीं उनकी कला प्रतिभा के माध्यम से नित नए उत्पादों का सृजन कर आम जनता के सामने परोसते हैं।

लेखक श्री पन्नालाल मेघवाल की कला एवं संस्कृति तथा विरासत संबंधित पन्द्रह पुस्तकें और 650 आलेख राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। उन्हें

पन्नालाल मेघवाल

साहित्य में उल्लेखनीय कार्य के लिए डॉ. अंबेडकर सम्मान- 2022 तथा कला एवं संस्कृति में उत्कृष्ट लेखन के लिए भूपेन हजारिका गौरव सम्मान- 2022 से नवाजा जा चुका है।

श्री मेघवाल की इन पुस्तकों में 40 हस्तशिल्प कलाओं को मनमोहक चित्रों के माध्यम से प्रकाशित किया है। 210 पृष्ठों की राजस्थान हस्तशिल्प कलाएं पुस्तक का मूल्य 400/- है, जबकि 240 पृष्ठों की 'दी हैंडीक्राफ्ट्स आफ राजस्थान' पुस्तक का मूल्य 500/- है। साहित्यागार जयपुर से प्रकाशित ये पुस्तकें साहित्यागार, अमेजॉन एवं फ्लिपकार्ट पर उपलब्ध हैं।

–डॉ. बीपी भटनागर,
पूर्व कुलपति, राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, उदयपुर

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 23 मार्च, 2023

चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, द्वितीया तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2080, रेवती नक्षत्र दिन 2:08 तक, ऐन्द्रयन योग रात्रि 3:41 तक, बालव करण प्रात: 7:16 तक, चन्द्रमा दिन 2:08 से मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-मीन, मंगल-मिथुन, बुध-मीन, गुरू-मीन, शुक्र-मेष, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज चेटीचण्ड (सिन्धी), श्री झूलेलाल जयन्ती, चन्द्र दर्शन, साम्यार्ध, दक्षिण श्रृंगोन्नति, सिंजारा (गणगौर), चन्द्रव्रत, तैत्रव्रत है। पंचक दिन 2:08 पर समाप्त होंगे।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:02 तक, चर 11:03 से 12:33 तक, लाभ अमृत 12:33 से 3:33 तक, शुभ 5:03 से 6:34 तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:32, सूर्यास्त 6:35

मेष

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ बनी रहेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

वृष

अपने आर्थिक/वित्तीय मामलों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा है। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात अनावश्यक धन खर्च हो सकता है

कर्क

नवीन कार्यों के संदर्भ में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी।

सिंह

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

कन्या

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात यात्रा में दुर्घटना का भय है।

तुला

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित विवादों से राहत मिल सकती है। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। उचित परामर्श मिलेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात विवादों से राहत मिल सकती है।

धनु

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मकर

पारवार म मन का प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। आज विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है।

कुंभ

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन

मन:स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।